eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

लैंगिक असमानता को कम करने में ''युवा'' एवं ''युवा नीति'' की भूमिका

[1]डॉ0 अंजू सिंह

[1]प्रो0 अर्थशास्त्र, महाराजा बिजली पासी राज0स्ना0महा0, आशियाना, लखनऊ

Received: 25 September 2023 Accepted and Reviewed: 30 September 2023, Published : 01 Nov 2023

Abstract

युवा राष्ट्र के भविष्य है। युवाओं के पास हमारी दुनिया को बेहतर बनाने, परिवर्तन लाने की शक्ति एवं जुनून है। युवा नीति का उद्देश्य युवाओं के ज्ञान कौशल और दक्षता को विकसित कर लैंगिक समानता हासिल करने तथा समान अधिकार व अवसर सुनिश्चित करने की दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता है। वभिन्न सरकारी योजनाओं एवं न्यायालय की सक्रियता के कारण महिलाओं को उनके हक दिये जाने के बावजूद लैंगिक असमानता को हम जड़ से खत्म नहीं कर पा रहे है। समाज में लैंगिक असमानता सोच–समझ कर बनायी गयी एक खाई है जिसमें समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न युवा नीतियों के द्वारा युवाओं को ही चर्चा में शामिल कर उनकी सोच को प्राथमिकताओं में लाकर लैंगिक असमानता को कम करने में जोर दिया गया है। यह कार्य महाविद्यालय स्तर से ही शुरू करना चाहिए एवं विकृत मानसिकता वाले युवाओं को सही परामर्श व मार्गदर्शन कर उनकी सोच में बदलाव लाना चाहिए।

मुख्य बिन्दु: लैंगिक असमानता, लैंगिक न्याय, कौशल विकास, युवा नीति।

Introduction

वर्तमान परिवेश में युवा वर्ग की भूमिका को सतत विकास एवं समाज में नीतिगत बदलाव लाने का मुख्य कारक माना है। युवा आत्मनिर्भर भारत व नवीनतम तकनीकों का प्रयोग कर सामाजिक संरचना में बदलाव लाने, जलवायु परिर्वन से निपटने व लैंगिक असमानता को कम करने में सकारात्मक भूमिका अदा करने में सक्षम है। किसी भी देश की प्रगति की माप उस देश की महिलाओं की प्रगति पर निर्भर होती है। **लैंगिक न्याय** लैंगिक असमानता को दूर करने पर ही सम्भव है। भारत के परिप्रेक्ष्य में लैगिंक न्याय की प्राप्ति के लिए **''युवा नीति''** का अनुसरण बहुत ही ज्यादा आवश्यक हो जाता है। यह नीति महिलाओं के सशक्तीकरण व समानता के उन सिद्धांतों को पूर्ण करता है, जिसे समाज को तलाश है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 14 व 15 में लिंग के आधार पर महिला व पुरूष के मध्य भेदभाव नहीं किये जाने का मूल अधिकार प्राप्त होने के बावजूद आज भी व्यवहारिक स्तर पर महिलाओं के साथ विभेदकारी व्यवहार किया जा रहा है। इसके निराकरण के लिए **''युवा''** एवं ''युवा नीति'' की भूमिका पर गंभीरता से प्रकाश डालना ही अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। यह युवा नीति समग्र भारत को एक नई दिशा प्रदान करेगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

प्रस्तुत अध्ययन की विधि प्रकरण आधारित आनुभाविक रही है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के रूप में साक्षात्कार व द्वितीयक स्त्रोत के रूप में विभिन्न वेबसाइट, पत्र–पत्रिकाओं के जरिये सामग्री एकत्रित की गयी है, **1988 में पहली राष्ट्रीय युवा नीति** बनाई गयी जिसका फोकस राष्ट्रीय एकीकरण को बढावा देना, कौशल विकास एवं निर्णय लेने में युवा की भागीदारी को बढाना था। पर इसमें लैंगिक भेदभाव को खत्म करने में किसी विशिष्ट कार्यक्रम एवं इससे सम्बन्धित मुद्दों की कार्य योजना पर जोर नहीं दिया गया था। **2003 में दूसरी राष्ट्रीय युवा नीति** आई जो **13–35** वर्ष के बीच के लोगों को युवा वर्ग माना और दो कारक **युवा का सशक्तीकरण** और **लैंगिक पक्षपात** को ध्यान में रखकर **लैगिंक न्याय** पर जोर दिया गया। इसी मुद्दों को ध्यान में रखकर **2005 में घरेलू हिंसा अधिनियम कानून** पास किया जिसमें सभी क्षेत्रों में पुरूषों के बराबर अधिकार, दायित्व व रोजगार के अवसर देने की बात कही गयी। इसके पश्चात **2014 में जो** राष्ट्रीय युवा नीति आई उसमें **15 से 29 वर्ष** के लोगों के **युवा वर्ग** माना जो **पाँच उद्देश्य** व **ग्यारह प्राथमिकताओं** वाले क्षेत्रों की पहचान करती है जिसमें **शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार, उद्यमिता, स्वास्थ्य, खेल, सामाजिक मूल्यों को बढावा देना, सामुदायिक जुड़ाव, राजनीति एवं शासन में भागीदारी, युवा जुड़ाव, समावेश और सामाजिक न्याय सामिल है। सितम्बर 2015 में संयुक्त राष्ट्र की उच्च स्तरीय बैठक में एजेण्डा 2030** के अन्तर्गत **17 सतत विकास लक्ष्यों** में से **लक्ष्य 5** के अन्तर्गत ''**लैंगिक समानता**'' के विषय को शामिल किया गया है। **यूनिसेफ इण्डिया** ने 2018–2022 के कार्यक्रम में लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार व महत्व को शामिल किया और उन्हें उनकी क्षमता के अनुरूप विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया। हाल ही में जारी **विश्व असमानता रिपोर्ट 2022** के अनुसार महिला श्रम आय हिस्सा वर्ष 1990 में 30 प्रतिशत था जो 2022 में बढ़कर 35 प्रतिशत हो गया। इसने भारत को विश्व के सबसे असमान देशों मे शामिल किया है। भारत में महिला श्रम शक्ति की हिस्सेदारी 2017–18 में 22.9 प्रतिशत, 2018–19 में 23.5 प्रतिशत, 2019–20 में 28.4 प्रतिशत व 2020–21 में 29.8 प्रतिशत थी। वह 2021–22 में थोड़ा सा कम होकर 29.4 प्रतिशत हो गयी है। शहरी महिलायें की हिस्सेदारी में काफी वृद्धि देखने को मिली है। 60 प्रतिशत महिलायें 2021–22 में स्वरोजगार हासिल किए हुए है। वही वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक (जी0जी0जी0ई0 2023) रिपोर्ट जारी किया गया जो महिला व पुरूष के बीच स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राजनीति पर हुई प्रगति को ट्रैक करता है। जिसमें ग्लोबल जेन्डर गैप स्कोर 68.4 प्रतिशत है जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 0.30 प्रतिशत का मामुली सुधार हुआ है। इस रिपोर्ट के अनुसार विश्व में पूर्ण लैंगिक समानता हासिल करने में **131** वर्ष लगेंगे। 2006–2023 की अवधि में **शैक्षिक उपलब्धि** में **लैंगिक अंतर को 95.2 प्रतिशत** कम किया गया है यानि शैक्षिक क्षेत्र में लैंगिक अंतर खत्म होने में मात्र 15 वर्ष लगेंगे। **आर्थिक भागीदारी और अवसर में लैंगिक अंतर 60.1 प्रतिशत** है जो बहुत बड़ी चुनौती को उजागर करता है। इसे खत्म करने में 169 वर्ष लगने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

का अनुमान है। राजनीति क्षेत्र में लैंगिक अंतर को खत्म होने में **162 वर्ष** लगेंगे। स्वास्थ्य क्षेत्र में लैंगिक अंतर 96 प्रतिशत कम हो गया है। जो हमारे लिए सकारात्मक कदम है।

इस रिपोर्ट में भारत का प्रदर्शन **146** देशों में **135 वें (2022) से घटकर 2023 में 127 वां** हो गया है जो इसकी रैंकिग में सुधार का संकेत देता है। भारत ने **समग्र लैंगिक अंतर को 64.3 प्रतिशत** कम कर दिया है। आर्थिक भागीदारी में भारत ने **36.7** लैंगिक समानता हासिल की है जो अभी बड़ी चुनौती बनी हुई है। राजनीति सशक्तीकरण क्षेत्र में **25.3** प्रतिशत समानता हासिल की है। संसद में महिला सांसद प्रतिनिधित्व 15.1 प्रतिशत है जो 2006 के बाद से सबसे अधिक है। लिंगानुपात में भी 1.9 प्रतिशत का सुधार हुआ है। वरिष्ठ व उच्च पदों एवं तकनीकी भूमिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में मामूल गिरावट दर्ज हुई है। पर शिक्षा के सभी स्तरों पर नामांकन में भारत के लैंगिक समानता हासिल कर ली है जो देश की शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक विकास को दर्शाता है। लैंगिक असमानता को कम करने में **जेंडर बजटिंग** शब्द विगत तीन दशकों से वैश्विक पटल पर उभरा है जिसके जरिए सरकारी योजनाओं का वित्तीय लाभ महिलाओं तक पहुँचाना था। इस प्रकार धीरे–धीरे समाज की मानसिकता में परिवर्तन होने से महिलाओं का सशक्तीकरण हो रहा है। इसे हम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एन0एफ0एच0एस0 -2019-21) के नवीनतम आकड़ों से समझ सकते है।

क्र0सं0	**महिला सशक्तीकरण (15–49 वर्ष)**	**वर्ष**	
		2015–16	**2020–21**
1	घरेलू निर्णय में विवाहित महिलाओं की भागीदारी	73.8%	92%
2	वे महिलायें जो पिछले 12 महीने काम किया व नगद भुगतान लिया	21.1%	24.9%
3	वे महिलायें जिनके पास बैंक में बचत खाता है व जिसका उपयोग वे करती है	64.5%	72.5%
4	वे महिलायें जो मोबाइल फोन का स्वंय उपयोग कर रही है।	66.6%	73.8%
5	वे महिलायें जो इण्टरनेट का उपयोग करती है	–	63.89%

स्टैटिसता के अनुसार 20 फीसदी महिलायें 2021 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों में अपना स्वंय का व्यवसाय संचालित कर रही है। इस दण्ड चित्र द्वारा प्रदर्शित कर सकते है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

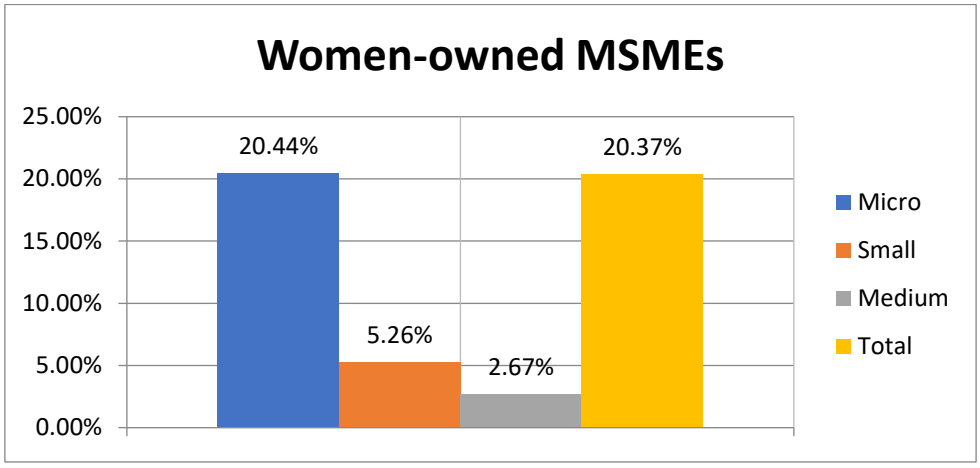

यदि आकड़ों पर विश्वास किया जाय तो लगभग 8.59 लाख महिलाओं के नेतृत्व वाले एम0एस0एस0ई0 को 28 मार्च 2022 तक पंजीकृत किया गया। इसमें 75 प्रतिशत को वृद्धि देखने को मिली है। 2021 में 4.9 लाख यूनिट का स्वामित्व महिलाओं के पास था जो बढ़कर 2022 में 8. 59 लाख यूनिट हो गया है।

2014 से 2023 तक लिंग के आधार पर **रोजगार क्षमता दर को** एक दण्ड चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है।

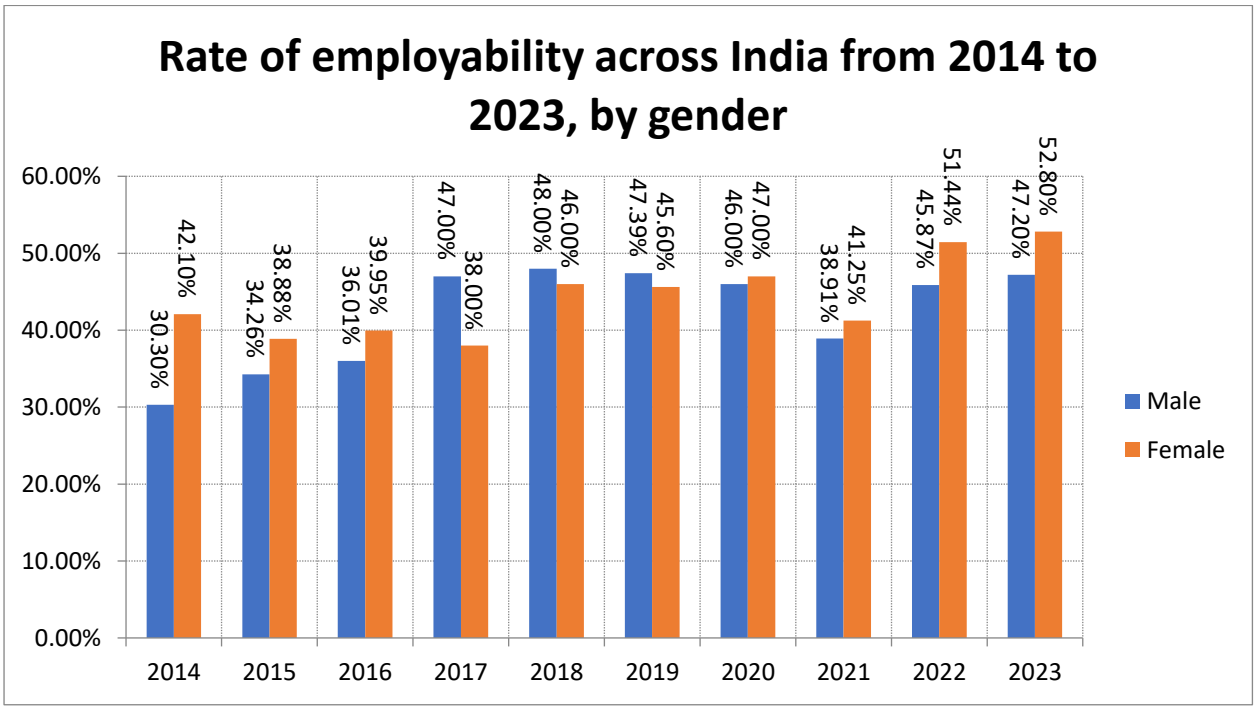

इस प्रकार रोजगार क्षमता में महिलाओं की हिस्सेदारी में उत्तरोतर वृद्धि हुई है। जो हमारे युवा नीति में जो लक्ष्य निर्धारित किये गये थे उसके अनुपालन को दर्शाता है। इस क्रम में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आन्ध्रप्रदेश जैसे राज्यों जो लड़कियों के पिछड़े पन में गिने जाते थे वे अब सबसे आगे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

है। बाल विवाह पिछले पांच वर्षों में घटकर 27 प्रतिशत से 23 प्रतिशत हो गया है। **संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम** की युवा नीति ने **नेहरू युवा केन्द्र** और **राष्ट्रीय सेवा योजना के वालिंयटर** के जरिये महिलाओं को कौशल विकास और अपने अधिकारों प्रति जागरूक करने के अभियान में तेजी लाये है। **2021 की राष्ट्रीय युवा नीति** का मसौदा प्रपत्र तैयार हुआ है वह भारत के युवा वर्ग के सशक्तीकरण के लिए उम्मीद और संभावनाओं से भरा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह नीति इक्कीसवी सदी में महिला उद्यमियों के उद्यमशीलता, इनोवेशन, तेजी से बदलाव व लचीलेपन को अपने मूल में रखकर लैंगिक असमानता को कम करने में कारागार साबित होंगी। ये महिलायें अपने उत्पादों से आत्म निर्भरता प्राप्त कर अन्तरराष्ट्रीय रूतबें में वृद्धि करने एवं भारत को विकसित देश बनाने के लिए विकास इंजन बनने के लिए तैयार है। बस जरूरत है कि पुरूष युवा वर्ग महिला युवा वर्ग के प्रति सम्मान, आदर और वे सभी सुविधांए उन सभी क्षेत्रों में देने के लिए तत्पर रहे जो सरकार पुरूष युवा वर्ग को दे रही है। जब हम युवा वर्ग की बात करते है तो उसमें महिला व पुरूष दोनों वर्ग शामिल होता है। यदि लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए युवाओं ने पूरी ताकत से कदम बढा लिये तो समाज में लैंगिक भेदभाव की कोई जगह नहीं रहेगी। बस सरकार की योजनाओं का लाभ एवं उनका सहयोग युवाओं को मिलते रहना चाहिए।

संदर्भः

1. National Youth Policy Documents 2003 & 2004
2. Bharath Kancharla Reviewing the NYP, the new 2021 draft and the 2014 Policy, Factly. in on, may 12, 2022
3. Gender main streaming in India's NYP, Knowledge. Unv.org.
4. Google/ Bain & Company, Powring the economy with her : Women Entrepreneurship in India.
5. Unicef. org. & Indian Express.
6. Global Gender gap Report 2023: WEF
7. Women's related data : NFH 5-5
8. Rathod, Manya, Employbility in India, 2014-23 by Gender Statista.